© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
International Journal of Scientific Research in Science and Technology

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 श्रद्धा सिंह
शोध निर्देशक, एसोसिएट प्रोफेसर,
टी0डी0पी0जी0 कालेज, जौनपुर, उ0प्र0

देवेन्द्र कुमार यादव
शोध छात्र, शिक्षक–शिक्षा विभाग,
टी0डी0पी0जी0 कालेज, जौनपुर, उ0प्र0

सारांश – प्रस्तुत अध्ययन **''माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन''** किया गया है। अध्ययन के उद्देश्य में माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के महिला एवं पुरुष शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन अलग–अलग किया गया है। अध्ययन में शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन वर्तमान समय से सम्बन्धित है अतः अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। प्रस्तुत अध्ययन में समग्र के रूप में आजमगढ़ जनपद में स्थित उन सभी सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त माध्यमिक स्तर के शिक्षकों को लिया गया है जो वर्तमान समय में शिक्षण के कार्य को सम्पादित कर रहे हैं। शोध कार्य में आजमगढ़ जनपद के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त माध्यमिक स्तर के 10 विद्यालयों (5 सरकारी एवं 5 गैर सरकारी) का चयन किया गया जिसमें से न्यायदर्श के रूप में सरकारी विद्यालयों से 50 शिक्षकों (25 पुरुष शिक्षक तथा 25 महिला शिक्षक) तथा गैर सरकारी विद्यालयों से 50 शिक्षकों (25 पुरुष शिक्षक तथा 25 महिला शिक्षक) अर्थात् कुल 100 शिक्षकों का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में डॉ0 जे0सी0 गोयल द्वारा निर्मित ''शिक्षण–व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति मापनी'' का प्रयोग किया गया। यह एक प्रमाणित परीक्षण के साथ–साथ वस्तुनिष्ठ एवं विश्वसनीय तथा इस परीक्षण की वैधता अधिक है। आँकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधियाँ का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक धनात्मक है। गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति सरकारी विद्यालयों की शिक्षकों की अपेक्षा कम पाया जाना इस बात को इंगित करता है कि गैर सरकारी विद्यालयों में कम वेतन, पदोन्नति न मिलना, संसाधनों की कमी एवं उन्हें अन्य सुविधाएँ न मिलना के साथ नौकरी से हटाये जाने की चिन्ता आदि हो सकता है। वहीं सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों को उच्च वेतन के साथ–साथ अन्य वेतन भत्ता आदि के साथ पदोन्नति आदि मिलना हो सकता है।

की–वर्ड– माध्यमिक स्तर, सरकारी, गैर सरकारी, शिक्षण व्यवसाय, अभिवृत्ति।

IJSRST18455115 | Received : 01 April 2018 | Accepted : 30 April 2018 | March-April-2018 [(4)7 | 866-876]

प्रस्तावना

यह एक निर्विवाद सत्य है कि समाज और राष्ट्र के निर्माण में शिक्षक का स्थान अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है। राष्ट्र का सच्चा और वास्तविक निर्माता शिक्षक ही माना जाता है। जिस प्रकार पौधे को वृक्ष रूप में परिवर्तित करने के लिए अथक परिश्रम द्वारा उसकी देखभाल की जाती है ठीक उसी प्रकार विद्यालय रूपी उपवन में विकसित होने वाले शिशु रूपी पौधों का सर्वांगीण विकास शिक्षक द्वारा किया जाता है। वह अपने विद्यार्थियों को शिक्षित और ज्ञानवान बनाकर ज्ञान की एक ऐसी अखण्ड ज्योति जला देता है जो देश और समाज के अंधकार को दूर कर सत्य और न्याय का प्रकाश फैलाती हैं।

अपने देश भारत की वर्तमान व्यवस्था में यद्यपि शिक्षक को अपना उचित स्थान प्राप्त नहीं है लेकिन नागरिकों में अच्छे संस्कार डालने के लिए विषम परिस्थितियों में भी अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए राष्ट्र निर्माण में लगा रहना पड़ेगा। यही नहीं न जाने कितने उदगार इस समय मेरे मानसपटल पर उभर रहे हैं पर कहने का तात्पर्य इतना ही है कि एक आदर्श शिक्षक अपने छात्र के जीवन को बनाता ही नहीं बल्कि उसे बहुत ऊँचा उठाता है। ऐसे शिक्षक को समाज और राष्ट्र में उचित स्थान न मिलना शिक्षक का ही नहीं देश का अपमान है। बिना शिक्षक की प्रेरणा और मार्गदर्शन के कोई भी देश प्रगति के पथ पर कैसे अग्रसर हो सकेगा।

किसी भी शिक्षण संस्थान की प्रतिष्ठा उसमें कार्यरत (सेवारत) अध्यापकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। किसी भी समाज में समय और स्थान से परे शिक्षक को अत्यधिक सम्मान प्राप्त होता है। उससे आशा की जाती है कि वह छात्रों के लिए अत्यधिक प्रेरणा व संवेगात्मक स्रोत बने। यह शिक्षकों की निष्ठा तथा बलिदान ही है जो उनको समाज में अद्वितीय सम्मान दिलाते हैं। किन्तु यक्ष प्रश्न यह है कि ऐसे शिक्षक कहाँ और कैसे मिलेगें? सुयोग्य शिक्षकों की कमी उचित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में एक अवरोध है। मेधावी युवा पीढ़ी के लिए, उनमें प्रेरणा उत्पन्न करने के लिए तथा उनके अन्दर वांछनीय दृष्टिकोण उत्पन्न करने के लिए शिक्षण व्यवसाय को उच्च आकांक्षापूर्तिकर्ता होने की आशा की जाती है। शायद ही कोई इस बात से इन्कार कर सकता है कि शिक्षण, एक व्यवसाय के रूप में समर्पण एवं सेवा भाव की मांग करता है। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता है कि कोई व्यक्ति प्राथमिक स्कूल का शिक्षक है अथवा विश्वविद्यालय का प्रोफेसर, दोनों में ही अपने व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण होना चाहिए।

शिक्षण प्रक्रिया को सफल बनाने में टैगोर ने शिक्षक को अतिमहत्वपर्णू दायित्व सौंपा है। उन्होंने बालक को दैवीय प्रकाशयुक्त माना है। जिसको देखना शिक्षक का प्रमुख दायित्व हैं। इस सम्बन्ध में टैगोर ने लिखा है कि – *जो भावी यश के तेज प्रकाश को नहीं देखते अपने ज्ञान, पद और राष्ट्रभाव के दर्पण में उससे सर्वदा घृणा करते हैं, वे एक अध्यापक के पद के अयोग्य है।* दूसरी ओर टैगोर का यह भी कथन है कि *शिक्षक को आचरण तथा व्यवहार में अच्छा होना चाहिए ताकि विद्यार्थी उसका अनुसरण कर स्वयं अच्छा आचरण तथा व्यवहार करें।*

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने अपने प्रतिवेदन में लिखा है कि – *अपेक्षित शिक्षा के पुनर्निमाण में सबसे महत्वपूर्ण तत्व शिक्षक, उसके व्यक्तिगत गुण, उसकी शैक्षिक योग्यताएं, उसका व्यावसायिक प्रशिक्षण और उसकी स्थिति है जो वह विद्यालय तथा समाज में ग्रहण करता है। विद्यालय की प्रतिष्ठा तथा समाज के जीवन पर उसका प्रभाव निःसंदेह रूप से उन शिक्षकों पर निर्भर है जों कि उस विद्यालय में कार्य कर रहे हैं।*

आज के तकनीकि व वैज्ञानिक युग में आजीविका अथवा रोजी–रोटी की समस्या सभी वर्गों तथा स्तरों के मनुष्य के समक्ष है। इस समस्या के निराकरण हेतु मानव किसी न किसी रोजगार अथवा व्यवसाय को अपनाता है, परन्तु किसी भी व्यवसाय अथवा रोजगार में सफल होने के लिए व्यक्ति को उस व्यवसाय एवं रोजगार के विषय में सम्पूर्ण जानकारी होनी चाहिए, अथवा यूँ कह सकते हैं कि उस व्यवसाय अथवा रोजगार से सम्बन्धित शिक्षा व्यक्ति को प्राप्त है तो व्यवसाय में सफलता की भावना बढ़ जाती है।

व्यावसायिक अभिवृत्ति दो शब्दों से मिलकर बना है – व्यवसाय एवं अभिवृत्ति।

सम्बन्धित व्यवसाय अथवा रोजगार की शिक्षा इस बात को सुनिश्चित नहीं करती है कि व्यक्ति को उस व्यवसाय अथवा रोजगार में निश्चित सफलता प्रापत होगी। किसी भी व्यवसाय अथवा रोजगार में सुनिश्चित सफलता के लिए अथवा उस व्यवसाय को प्रारम्भ करने के पश्चात् व्यक्ति के अन्दर उस व्यवसाय से सम्बन्धित सकारात्मक दृष्टिकोण का होना आवश्यक है।

दृष्टिकोण अथवा अभिवृत्ति क्या है इसके अर्थ को स्पष्ट करना एक कठिन कार्य है। अभिवृत्ति व्यक्ति के मनोभावों अथवा विश्वासों को इंगित करती है और ये बताती है कि व्यक्ति क्या महसूस करता है अथवा व्यक्ति के पूर्व विश्वास क्या है? अभिवृत्ति से अभिप्राय व्यक्ति के उस दृष्टिकोण से है, जिसके कारण वह किन्हीं वस्तुओं, व्यक्तियों, परिस्थितियों, योजनाओं आदि के प्रति किसी विशेष प्रकार का व्यवहार करता है। दूसरे शब्दों में अभिवृत्ति व्यक्ति के व्यक्तित्व के वे प्रवृत्तियाँ हैं जो उसे किसी वस्तु, व्यक्ति अथवा कार्य के सम्रुबन्ध में विशिष्ट प्रकार के व्यवहार को प्रदर्शित करने का निर्णय लेने के लिए प्रेरित करती है।

ट यावसायिक अभिवृत्ति से आशय व्यक्ति के व्यवसाय के प्रति विशेष प्रकार के व्यवहार से है, वर्तमान समय में शिक्षा को एक व्यवसाय के रूप में स्वीकार किया गया है तथा हमारी शैक्षिक संस्था को व्यावसायिक अभिकरणों के बराबर का दर्जा प्रदान किया गया है, ऐसे में इन संस्थाओं में शिक्षण कार्य करने वाले व्यक्तियों से शिक्षण व्यवसाय के प्रति विशिष्ट प्रकार के व्यवहार को प्रदर्शित करने की प्रत्याशा रहती है, जैसे कि शिक्षकों का कक्षा तथा कक्षा के बाहर विद्यार्थियों के प्रति किया गया व्यवहार, शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में संलिप्तता, साथी अध्यापकों तथा अधिकारियों के प्रति शिक्षकों का व्यवहार, शिक्षण–अधिगम तथा मूल्यांकन की प्रक्रिया में दिन–प्रतिदिन होने वाले नवाचारों की जागरूकता तथा शिक्षण के क्षेत्र में अपने को उन्नत बनाने के लिए प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष तथा क्रियात्मक रूप से किये गये व्यवहार शामिल है।

मौर्य, एच.सी. (1990) ने विश्वविद्यालय और पूर्व विश्वविद्यालयीन व्याख्याताओं की शैक्षिक दक्षता, व्यक्ति और अभिवृत्ति के बीच सम्बन्ध के अध्ययन किया और पाया कि शिक्षण अभिवृत्ति के निर्माण में वाह्य वातावरण का विशेष योगदान होता है। पाठ्यक्रम में लगातार परिवर्तन, शिक्षण दक्षता को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करता है। कक्षाकक्ष का आकार समायोजन और शिक्षण दक्षता को प्रभावित करता है।

शिक्षक के अनुभव का उनके व्यावसायिक अभिवृत्तियों पर सार्थक प्रभाव डालता है। **पाण्डेय एवं मैखुरी (1999)** ने प्रभावी एवं अप्रभावी शिक्षकों की शैक्षिक अभिवृत्ति के अध्ययन में पाया कि उच्च अनुभवी प्रभावी शिक्षकों की अभिवृत्ति, निम्न अनुभवी अप्रभावी शिक्षकों की तुलना में धनात्मक थी। **भावना (2005)** ने देवी पाटन के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की ऊर्जा शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाले कारकों एवं योग्यता व्यक्तित्व विशेषताओं के सम्बन्ध का अध्ययन में पाया कि विभिन्न शैक्षणिक योग्यता वाले शिक्षकों की ऊर्जा शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया।

अतः अध्ययनकर्त्ता ने अपने अध्ययन में माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया है।

समस्या कथन

''माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।''

अध्ययन का उद्देश्य–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के महिला शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ–

प्रस्तुत अध्ययन में उद्देश्यों के आधार पर निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है।

3. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के महिला शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है।

शोध विधि–

प्रस्तुत अध्ययन वर्तमान समय से सम्बन्धित है अतः अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

जनसंख्या–

प्रस्तुत अध्ययन में समग्र के रूप में आजमगढ़ जनपद में स्थित उन सभी सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त माध्यमिक स्तर के शिक्षकों को लिया गया है जो वर्तमान समय में शिक्षण के कार्य को सम्पादित कर रहे हैं।

अध्ययन का न्यादर्श–

शोध कार्य में आजमगढ़ जनपद के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त माध्यमिक स्तर के 10 विद्यालयों (5 सरकारी एवं 5 गैर सरकारी) का चयन किया गया जिसमें से न्यायदर्श के रूप में सरकारी विद्यालयों से 50 शिक्षकों (25 पुरुष शिक्षक तथा 25 महिला शिक्षक) तथा गैर सरकारी विद्यालयों से 50 शिक्षकों (25 पुरुष शिक्षक तथा 25 महिला शिक्षक) अर्थात् कुल 100 शिक्षकों का चयन किया गया है।

शोध उपकरण–

प्रस्तुत अध्ययन में डॉ0 जे0सी0 गोयल द्वारा निर्मित ''शिक्षण–व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति मापनी'' का प्रयोग किया गया। यह एक प्रमाणित परीक्षण के साथ–साथ वस्तुनिष्ठ एवं विश्वसनीय तथा इस परीक्षण की वैधता अधिक है।

सांख्यिकी विधियाँ–

आँकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधियाँ का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

उद्देश्य–1 **माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन**

H_1 माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर है।

H_{01} माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 1

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान

क्र0 सं0	संस्था	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	मध्यमान का अन्तर $D=(M_1 \sim M_2)$	प्रमाणिक त्रुटि σ_D	टी–मान (t)	सारणी मान
1.	सरकारी	50	5.24	0.66	0.47	0.14	3.36*	1.98 df=98
2.	गैर सरकारी	50	4.77	0.70				

*0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक

व्याख्या–

उपर्युक्त सारणी सं0 1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान क्रमशः 5.24 एवं 4.77 तथा मानक विचलन क्रमशः 0.66 एवं 0.70 है। परिगणित टी–अनुपात का मान 3.36 है। मुक्तांश 98 तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर टी–अनुपात का सारणी मान 1.98 है अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणी मान से अधिक है, अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है।

प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्राकल्पित किया गया था कि *माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर है* जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर स्वीकृत की जाती है तथा शून्य परिकल्पना *माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर नही है,* निरस्त की जाती है तथा परिणामतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक धनात्मक है अर्थात् दोनों में सार्थक अन्तर पाया गया।

आरेख सं0 1

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमानों का आरेखीय चित्र

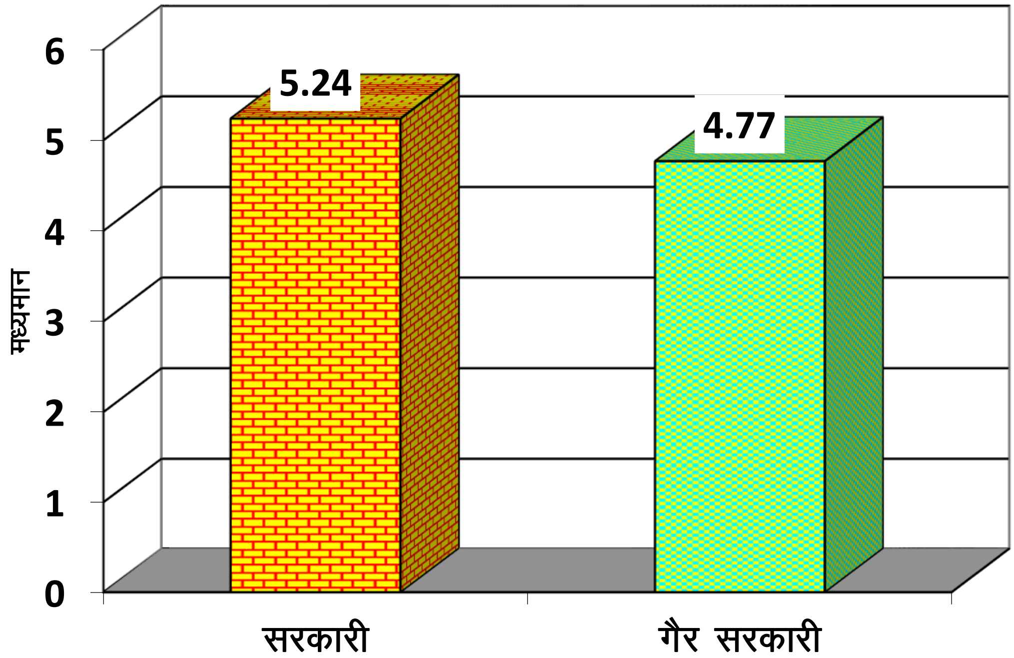

उद्देश्य–2 माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

H_2 माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर है।

H_{02} माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 2

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान

क्र0 सं0	संस्था	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	मध्यमान का अन्तर $D=(M_1 \sim M_2)$	प्रमाणिक त्रुटि σ_D	टी–मान (t)	सारणी मान
1.	सरकारी	25	5.17	0.57	0.47	0.19	2.47*	2.01 df=48
2.	गैर सरकारी	25	4.70	0.76				

*0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक

व्याख्या–

उपर्युक्त सारणी सं0 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान क्रमशः 5.17 एवं 4.70 तथा मानक विचलन क्रमशः 0.57 एवं 0.76 है। परिगणित टी–अनुपात का मान 2.47 है। मुक्तांश 48 तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर टी–अनुपात का सारणी मान 2.01 है अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणी मान से अधिक है, अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है।

प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्राकल्पित किया गया था कि *माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर है* जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर स्वीकृत की जाती है तथा शून्य परिकल्पना *माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर नही है,* निरस्त की जाती है तथा परिणामतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक धनात्मक है अर्थात् दोनों में सार्थक अन्तर पाया गया।

आरेख सं0 2

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमानों का आरेखीय चित्र

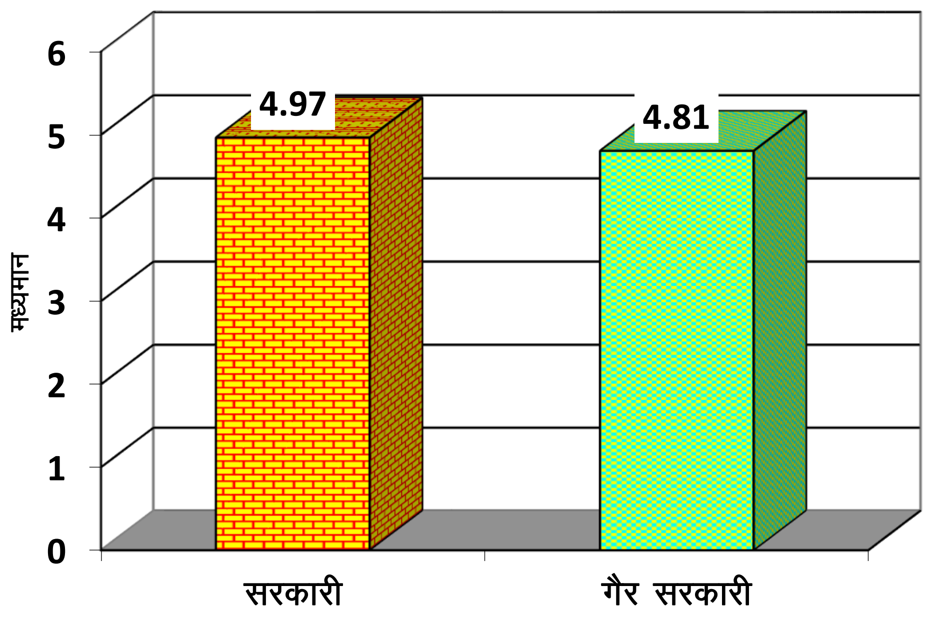

उद्देश्य–3 माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों की महिला शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

H_3 **माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों की महिला शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर है।**

H_{03} **माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों की महिला शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**

सारणी सं0 3

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों की महिला शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान

क्र0 सं0	संस्था	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	मध्यमान का अन्तर $D=(M_1 \sim M_2)$	प्रमाणिक त्रुटि σ_D	टी–मान (t)	सारणी मान
1.	सरकारी	25	5.29	0.75	0.44	0.20	2.02*	2.01 df=48
2.	गैर सरकारी	25	4.85	0.66				

*0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक

व्याख्या–

उपर्युक्त सारणी सं0 3 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों की महिला शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान क्रमशः 5.29 एवं 4.85 तथा मानक विचलन क्रमशः 0.75 एवं 0.66 है। परिगणित टी–अनुपात का मान 2.02 है। मुक्तांश 48 तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर टी–अनुपात का सारणी मान 2.01 है अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणी मान से अधिक है, अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है।

प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्राकल्पित किया गया था कि *माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों की महिला शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर है* जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर स्वीकृत की जाती है तथा शून्य परिकल्पना *माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों की महिला शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर नही है,* निरस्त की जाती है तथा परिणामतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों की महिला शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक धनात्मक है अर्थात् दोनों में सार्थक अन्तर पाया गया।

आरेख सं0 3

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों की महिला शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमानों का आरेखीय चित्र

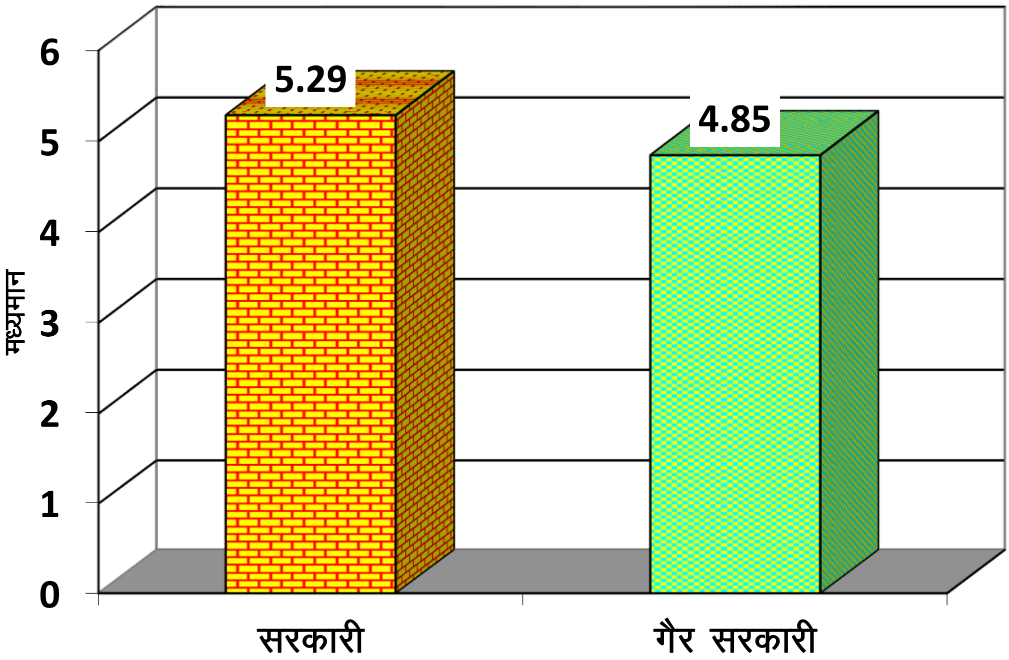

निष्कर्ष–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक धनात्मक है।
2. माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों की अपेक्षा अधिक धनात्मक है।
3. माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों की महिला शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों की महिला शिक्षकों की अपेक्षा अधिक धनात्मक है।

गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति सरकारी विद्यालयों की शिक्षकों की अपेक्षा कम पाया जाना इस बात को इंगित करता है कि गैर सरकारी विद्यालयों में कम वेतन, पदोन्नति न मिलना, संसाधनों की कमी एवं उन्हें अन्य सुविधाएँ न मिलना के साथ नौकरी से हटाये जाने की चिन्ता आदि हो सकता है। वहीं सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों को उच्च वेतन के साथ–साथ अन्य वेतन भत्ता आदि के साथ पदोन्नति आदि मिलना हो सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- मौर्य, एच.सी. (1990). विश्वविद्यालय और पूर्व विश्वविद्यालयीन व्याख्याताओं की शैक्षिक दक्षता, व्यक्ति और अभिवृत्ति के बीच सम्बन्ध के अध्ययन का प्रयास, पी.एच.डी. शोध, आगरा विश्वविद्यालय।
- भावना (2005). देवी पाटन के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की ऊर्जा शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाले कारकों एवं योग्यता व्यक्तित्व विशेषताओं के सम्बन्ध का अध्ययन, शोध प्रबन्ध (शिक्षाशास्त्र), डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद।
- रेड्डी, बी.एम. (1991). आन्ध्रपदेश में माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अभिवृत्ति व शिक्षण अभियोग्यता का उनके लिंग, आयु, विभाग व वर्ग के सम्बन्ध से सम्बन्ध निर्धारण का प्रयास, पी.एच.डी. एजुकेशन, उसमानिया विश्वविद्यालय।
- रेड्डी, वी. मलिकार्जुन (2010). ए स्टडी ऑफ टीचिंग एप्टीट्यूड, सोशल एडजेस्टमेन्ट एण्ड जॉब सेटिसफेक्शन ऑफ सेकेण्डरी स्कूल साइंस टीचर्स, शोध प्रबन्ध शिक्षाशास्त्र, आचार्य नागार्जुन विश्वविद्यालय, आन्ध्रप्रदेश।
- रिजवी, हैदर अली (2016). कम्बाइनिंग मैरेज एण्ड कैरियर : द प्रोफेशनल एडजेस्टमेन्ट ऑफ मैरिटल टीचर्स, रिसर्च पेपर, *जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड प्रैक्टिस*, वॉल्यूम–7, नं0 7।
- शेरगिल, सबरजीत सिंह एवं लाल, रोशन (2010),ए कम्प्रेटिव स्टडी ऑफ जॉब सेटिसफेक्शन एण्ड एटीट्यूड टूवर्ड एजूकेशन एमंग मेल एण्ड फीमेल टीचर्स ऑफ डिग्री कालेज, *इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ मार्केटिंग, फाइनेन्स सर्विसेज एण्ड मैनेजमेन्ट रिसर्च*, वॉल्यूम–1, नं0 1, पृ0 57–64।